

Vol. No. 163

Ahimsa Foundation

March, 2014

The Only Jain E-Magazine

in  
Community Service for 14 Continuous Years

World Over + 100000  
Readership

## PARNA AUCTION GOES FOR RUPEES 21,21,00,000 AT MARINE DRIVE MUMBAI



Maharaj Saheb Shri Hasratan Vijayji has completed hundred and eighty days of fasting. This occasion has given the reason for glorious celebrations to his followers and community members. As per the prevalent tradition, the community announced Parna Auction. A big number of followers participated in this auction at Marine Drive Mumbai where Maharaj Saheb was holding his past. It is reported that, the offer of Rupees Twenty One Crore Twenty Lakhs was finally went under the hammer and the successful bidder was Ghoghari Visha Oswal, Smt. Gajraben Girdharlal Jivanlal Shah of Jasparawale. The community offered the family the title of "Nagar Seth". This family is acknowledged for its regular financial and other contributions to the community. The Parna procedure and celebrations were held at Marine Drive Gymkhana in the auspicious presence of Prem Surishawarji M.S., Nayan Padamsagarji M. S. Hemchandji M. S. and Balmuni Vinamra Sagarji. The programme was also relayed live over Arihant Television Channel. Source : Mukesh Nahar Jain, Email : jainforum.info@yahoo.com

### **JAIN INTERNATIONAL ORGANISATION TO SET UP 24 UNIVERSITIES IN THE NAME OF 24 TIRTHANKARS**

Feb. 15, 2014. Pujya Gurudevshri Nayapadmasagarji Maharajsaheb, founder of Jain International Organisation announced that JIO will set up 24 universities in the name of 24 Jain Tirthankars, in order to avail benefits of Minority Status to Jains.



He was speaking in a function held in Mumbai on 15th February 2014 to honor 3 Central Govt. Ministers for their remarkable contribution in obtaining Minority Status for Jains. These included Central Rural Development Minister Mr. Pradeep Jain "Aditya", Minister of Minority Mr. K. Rahman Khan & Central State Minister Mr. Milind Deora. The occasion was graced by Pujya Lokesh Muniji, Mr. Mangalprabhat Lodha-MLA, Smt. Shobhana Jain-President UNI, Mr. S. C. Jain (Delhi) and Mr. Subhash Oswal (Delhi). Pujya Gurudevshri declared that JIO would shortly publish a booklet on information & advantage of Minority Status of Jains. The booklet would also include various legal provisions relating to Minority status.

Pujya Gurudevshri Nayapadmasagarji categorically stated that Hindu was our culture & Jain was our religion. As Jains were respected by all, Jains would play a vital role as a link between majority & minority communities". Pujya Gurudevshri stated that population of Jains in the world was 40 crore 2500 years ago, which was reduced to 8.50 crore before 900 years and presently it was 46 lacs as per last census by Govt. Jain community had always been peace loving, non-violent & charitable. Thus, there had been many attacks on Jain, being soft target. The Jains were forced to convert to other religions and their temples were also taken away or destroyed. Once upon a time famous temple of Tirupati Balaji was Jain temple. After getting Minority Status, Jains should get back all such converted temples & properties.



Mr. Hemant Shah, Prominent Leader of JIO in his welcome speech stated that the Jains would get benefits of reservation & security having got the minority status. Jains would now become a link between majorities & minorities. Prof. Rattan Jain from Delhi informed that with recent Minority Status given to Jains, protection would be given to their temples, culture, languages & ancient holy scripts, autonomy in management of education institutions, 50% reservation of seats for Jains in Jain educational institutions & professional technical educations, educational loan at concessional interest rate for higher education etc.

Mr. Sudhir Lodha of Chhenai further explained the benefits of Minority Status as a result of which Govt. would provide land and facilities for setting up of Jain educational institutions, properties of Jain Trusts would be out of purview of rent control act, due to

which it would be easy to get vacant possession from tenants in the premises etc. Govt. would not be able to interfere or acquire management of Jain shrines or places of pilgrimage.

### जुर्म न करने व मांसाहार का सेवन न करने का संकल्प ले - आचार्य ज्ञानसागर जी, तिहाड जेल

दिल्ली की केंद्रीय तिहाड जेल में हजारों कैदियों के सुखद भविष्य हेतु 24 फरवरी को विश्व जैन संगठन द्वारा राष्ट्रसंत जैन आचार्य पूज्य श्री ज्ञानसागर जी मुनिराज के प्रेरक प्रवचन से भविष्य में जुर्म न करने और नशीले प्रदार्थों व मांसाहार का त्याग करते हुए परिवार के साथ सुखमय जिंदगी व्यतीत करने हेतु मंगल प्रवचनों का संयोजन सकल जैन समाज, दिल्ली के सहयोग से किया गया!



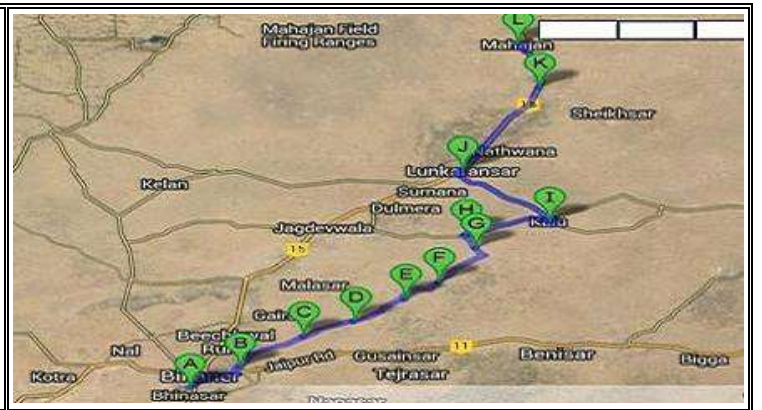


आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने कहा कि नर जीवन अपने कल्याण के साथ-2 देश, धर्म, परिवार और जनसेवा के कार्य करने के लिए मिला है, न कि दूसरों को सताने हेतु! कई व्यक्ति भूलवश अभावों से पीड़ित होकर या आवेश में आकर अपराध करता है जिसकी सजा केवल उसे ही नहीं अपितु उसके पुरे परिवार को भी भुगतनी पडती है! यदि समय रहते अपने द्वारा

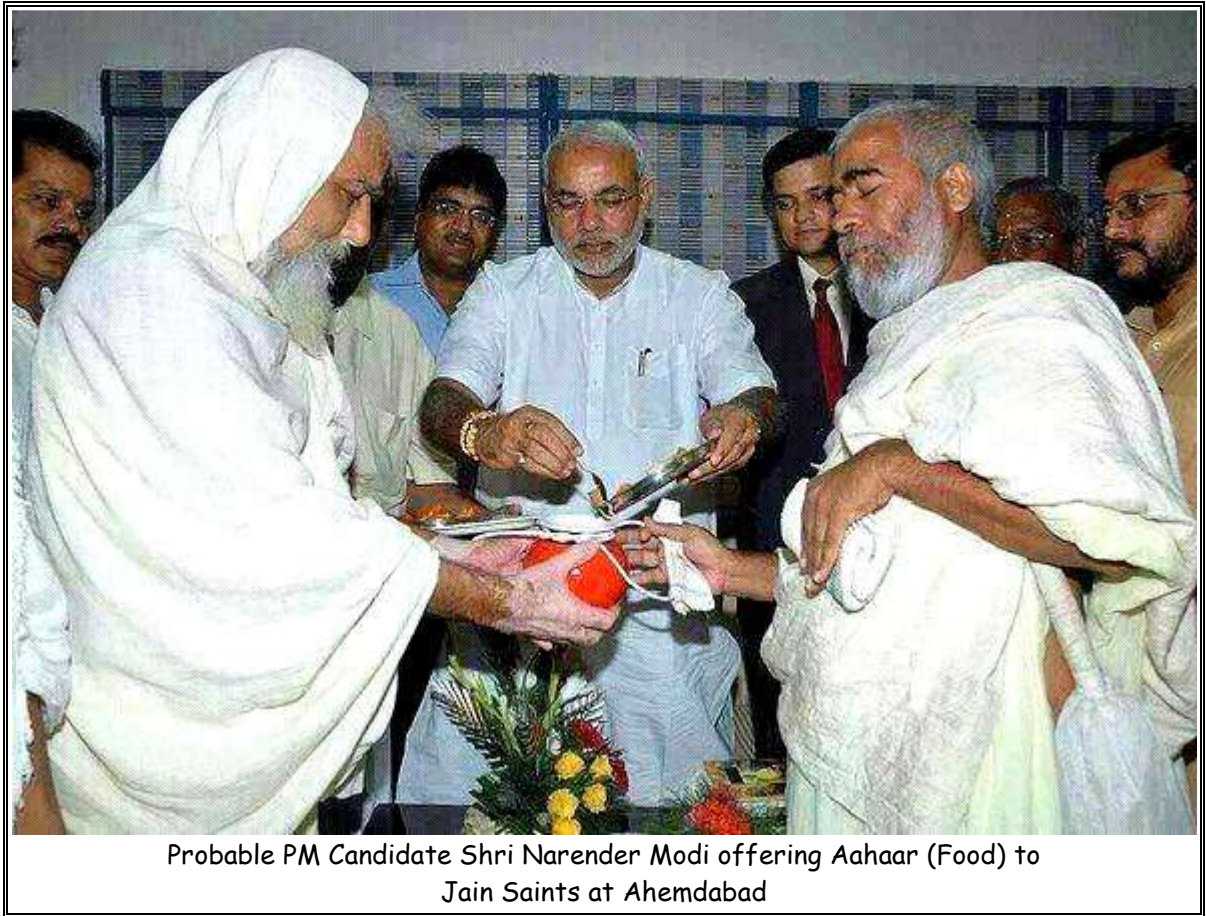
किये जा रहे अपराध और उसके परिणाम का विचार कर ले तो कभी भी अपराध न करें! एक बार गलती करके तिहाड में आकर आज संकल्प लें कि यहाँ से रिहा होकर भविष्य में कोई भी ऐसा कार्य नहीं करूँगा जिससे दुबारा यहाँ आना पड़े! पंछी को भी चाहे सोने के पिंजरे में कैद कर लो लेकिन वह भी खुले आसमान में उडना चाहता है, आप तो इंसान है, समझदार है! दुनिया का कोई भी धर्म जुर्म करने या दूसरो को सताने की इजाजत नहीं देता! उन्होंने कहा कि व्यसनमुक्त और अहिंसात्मक जीवन शैली से भविष्य को उज्ज्वल बनाया जा सकता है! भ्रामक विज्ञापनों द्वारा मांसाहार, अंडो और गुटके आदि के बारे में लोगो को गुमराह किया जा रहा है! शक्तिशाली पशुओं में हाथी और घोडे द्वारा मांसाहार नहीं किया जाता है फिर इंसान को इनकी आवश्यकता क्यों है?, नशा करने से सोचने, समझने की समझ समाप्त हो जाती है जिसके कारण वह अपराध करता है! आचार्य श्री के प्रवचनों से प्रेरित होकर कैदियों द्वारा बार-2 तालियां बजाकर आचार्य श्री के प्रवचनों की अनुमोदना की गयी और कई कैदी भावुक हो गए और कई कैदियों द्वारा बार-2 हाथ उठाकर भविष्य में जुर्म न करने हेतु संकल्प लेने की सहमति दी गयी!

इस अवसर पर जैन सभा, जनकपुरी द्वारा जेल में कैदियों की सुविधा हेतु एक कंप्यूटर भेंट दिया गया और जैन समाज, नजफगढ़ द्वारा सजा पूरी कर चुके लेकिन जुर्माने न भरने के कारण जेल में बंद अच्छे चाल-चलन वाले दो कैदियों की रिहाई हेतु जेल प्रशासन की सिफारिश पर जुर्माने की राशि जमा कर मुक्त कराया गया! Source : Sanjay K. Jain, E-Mail : vishwajains@yahoo.com

#### ACHARYA MAHASHRAMAN SCHEDULE GANGASHAHAR - DELHI

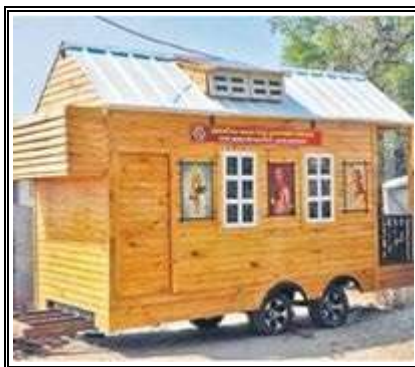


Probable Travel Plan:	16.03.14 - Shree Ganganagar	03.04.14 - Dera	27.04.14 - Dariapur	As per Google Map above
01.03.14 - Mahajan	19.03.14 - Lalgarh	Sacha Sauda	30.04.14 - Sirsa	
04.03.14 - Rajiasar	22.03.14 - Jandavali	06.04.14 - Kanakvala	03.05.14 - Sirsa	
07.03.14- Suratgarh	25.03.14 - Hanumangarh	15.04.14 - Bhikhi	06.05.14 - Pili	
10.03.14 - Pilibanga	Town	18.04.14 - Bareta	Mandori	
13.03.14 - G.R. Global School	28.03.14 - Sangaria	21.04.14 - Ratia	09.05.14 - Adampur	
	31.03.14 - Shergarh	24.04.14 - Jandali	15.05.14 - Jindal School	
			20.05.14 - Biran	
			23.05.14 - Gurukul	
			26.05.14 - Kharavad	
			29.05.14 - Bahadurgarh	
			30.05.14 - Delhi	



Probable PM Candidate Shri Narendra Modi offering Aahaar (Food) to Jain Saints at Ahemdabad

## जैन मुनि के विश्राम के लिए 10 लाख का मोबाइल हाउस



उदयपुर राज./ दिगंबर मुनि प्रसन्नसागरजी महाराज को विहार के दौरान रात्रि विश्राम के लिए अतिरिक्त नहीं चलना पड़े, इसके लिए उदयपुर के एक भक्त ने दस लाख रुपए का मोबाइल हाउस तैयार करवाया है, जो रविवार को गुजरात के दाहोद में उन्हें भेंट किया जाएगा। लगभग दस लाख रुपए की लागत से बना यह मोबाइल हाउस पूरी तरह इको फ्रेंडली है। इसमें मुनिश्री के लिहाज से तथा उनके नियमों को ध्यान में रखते हुए ही बनाया गया है। हाउस के बाहर मुनिश्री की तस्वीरें भी लगाई गई है।

क्या है खास -नॉन मोटराइज्ड बॉडी पर बनाया गया है, जिसमें फॉच्युनर के व्हील लगाए गए हैं। पाइन वुड से ऊपरी चैचिस बनाई गई है। जिसमें आठ बाइ आठ के दो कमरे हैं। हाउस की छत पर सोलर पैनल लगा है। जो



अधिकतम 110 वॉट की क्षमता उठा सकता है। एलईडी लाइट्स का इस्तेमाल किया गया है तथा हर कमरे में दो पंखे लगाए गए हैं। मुनिश्री के विश्राम के लिए पाटा लगाया गया है। पाइन वुड की खासियत है कि धूप, बरसात का इस पर कोई असर नहीं पड़ता है। बतौर विकल्प एयर कंडिशनर भी लगाया गया है।

कैसे आया विचार -मुनि प्रसन्नसागर जी के भक्त अजय जैन ने उनके साथ अब तक चार हजार से अधिक की पदयात्रा की है। जैन ने बताया कि विहार के दौरान कई बार ऐसी स्थिति बन जाती है, जब मुनिश्री को विश्राम के लिए स्थान नहीं मिलता। इसके चलते उन्हें 10 से 15 किमी अतिरिक्त पैदल चलना पड़ता है। मुनिश्री को अतिरिक्त नहीं चलना पड़े, इसके लिए मोबाइल हाउस बनाया गया है। Source : Ramesh Mehta

## असामाजिक तत्वों ने मुनि श्री शिवदत्त सागर जी महाराज पर हमला करा

2 March, 2014, ग्वालियर में त्रिशलागिरी में कल कुछ असामाजिक तत्वों ने मुनि श्री शिवदत्त सागर जी महाराज पर हमला करा जिसमें मुनि श्री को शारीरिक पीड़ा पहुंची ( उन्हें कई जगह चोटे आई हैं )। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कहते हैं की मध्य प्रदेश में जैनों को अल्प संख्यकधोषित किया है तो ये जैनों के साथ क्या हो रहा है। जैनों में मुनि को चलता-फिरता तीर्थ कहते हैं। तो मुख्यमंत्री जी आप हमारे तीर्थों (संतो) को बचाने के लिए कदम उठाये।

## NEWS ABOUT JAIN TEMPLES

### PARASNATH TEMPLE AREA TO BE DEVELOPED INTO TOURIST CENTRE



The area where world famous Parasnath Temple is situated in Giridih district will be developed into an attractive tourist destination, Jharkhand government said on Parliamentary Affairs Minister Rajendra Prasad Singh assured the House that the government would develop the pilgrim centre after Speaker Shashank Sekhar Bhokta directed the government for the same. The speaker's direction came following a question by members on construction of ropeways in some tourist spots. The 4,431 ft high Parasnath hill is the highest peak south of the Himalayas. The oldest of the Jain temples is located atop it. Parasnath is the 'Marang Buru' or hill deity of the Santhals of Hazaribagh, Manbhum, Bankura and Santhal Parganas.

But several Jain institutions including temples may not very much appreciate the initiative of the Jharkhand Government as this sacred place for pilgrimage will become crowded and commercial. To an extent the religious sanctity will also be lost. The community must seriously look into the programme of the state government before it is implemented.

### JAIN TEMPLES ARE SOFT TARGET FOR THIEVES

February 8, 2014 Indore: A Jain temple in Greater Brajeshwari was targeted by some miscreants, who managed to steal 15 chhatris worth Rs 1.5 lakh under Kanadia police station, on Thursday night. The miscreants also damaged one CCTV camera before committing the larceny. The police are investigating the matter. Investigating Officer said that the accused entered the temple and broke the temple door locks and took away goods. He said that 10 small and 5 big chhatris were stolen. He added that the CCTV cameras installed in the temple failed to capture the theft as one was not functioning due to some technical fault while the other was damaged by the miscreants.

### ANTIQUEN STOLEN FROM ANGADI JAIN TEMPLES



Friday 21, 2014, Mudigere, Chikmagalur district, Ancient statues at the two temples of Lord Mahaveera and Thirthankara, at Angadi in the taluk were stolen . The black-stone statues of Jain thirthankaras Mahaveera, Neminatha, Adinatha and Mallinatha have been stolen from the temples built by the Hoysala dynasty which had Sosevur, now identified as Angadi, as its capital. As renovation of the temples adjacent to each other, was set to begin on February 22, the idols were shifted to a makeshift shed on the temple premises, where they were offered poojas for the past two days. Police said the priest went to the temple after the pooja at the shed on Friday and found the statues missing. A statue of Lord Mahaveera in a sitting posture at the Mahaveera temple and three statues of Neminatha, Adinatha and Mallinatha in a standing posture at the Thirthankara temple, have been stolen, said the police. On receiving the complaint, a dog squad and forensic experts rushed to the spot. Information has been sought from the Department of Archaeology in Mysore for assessment of the value of the statues, said the police.

### **MAN ARRESTED FOR STEALING IDOL FROM TEMPLE**

Feb 11, 2014, Aurangabad : The City police have arrested a 70-year-old man for allegedly stealing an idol from a city-based Jain temple a couple of days ago. A complaint in this regard was lodged after closed circuit television cameras installed at the temple revealed the theft. The arrested accused has been identified as Bhiku Baburao Chintamani, a resident of Kachiwada. Chintamani was an employee of a city-based jewellery shop. The temple authorities then approached the City Chowk police with the footage, following which the police detained Chintamani. During interrogation, he admitted that he stole the idol thinking it to be of gold but it turned out to be of mixed metals. Thereafter, he threw the idol into a nullah, the police said. At the time of going to press, the police teams along with AMC's sanitary workers were still searching for the idol in the nullah.

### **MOODBIDRI: THEFT IN BADAGU BASADI IN JAINPET**

Date: 06 Feb, 2014, Moodbidri: More and more Jain shrines are being targeted by thieves in recent times, obviously for the sake of antiquity of the idols which have high sale value in the international grey market. This town, popularly known as Jain Kashi, has not yet recovered from the shock of last year's theft of a large number of ancient, rare and precious idols, some of them studded with gold and jewel stones. This was another sad day when it was revealed that thieves had got into the 800-year-old Badaga Basadi, where the reigning deity is Chandranath Swamy. Surprisingly, the basadi is surrounded from all sides by houses which was regarded as the best security for it. However, taking advantage of a fused street light next to it and resultant darkness, miscreants climbed over the roof and released the wooden latch and got down into the mantap where the devotees gather to take a bow. They broke open the alms box which was lying there and took away all the money.

## **EVENTS & SEMINARS**

### **JAIN COMMUNITY CONVERGES FOR FIRST-EVER MILAN IN DUBAI**

Dubai, Feb 4: The first-ever Jain Milan programme in Dubai was held recently at India Club Auditorium, Dubai. The auditorium was fully packed with community members enthusiastically gathered in support of the Milan in Dubai. The programme started with a traditional welcome by ladies to Parama Pujya Swasthi Sri Bhattaraka Charukeerthi Panditacharyavarya Maha Swamiji of Sri Jain Math, Moodbidri amidst the beating of drums. Sri Bhattaraka Swamiji inaugurated the event and did the aashirvachana of the first-ever Jain Milan in Dubai. He conducted the traditional Jain puja rituals and blessed the members and the guests.

All the guests including D Surendra Kumar, national executive president, Bharatiya Jain Milan, M S Mruthyunjay, president, Zone-8, Bharatiya Jain Milan, K Prasanna Kumar, executive president, Zone-8 Bharatiya Jain Milan, Pushparaj Jain, secretary, Zone-8 Mangalore - Division, Bharatiya Jain Milan and Frank Fernandes, CEO, Mosaco Shipping LLC Dubai were invited on to the stage and honoured with bouquets.



Later P Devkumar Kambli, president Jain Milan Dubai - UAE rendered a beautiful welcome address and briefed on the formation of the Jain Milan in Dubai and how he was supported by other members in the formation process. P Devkumar Kambli is well-known in social circles around the UAE for quite a long time. Sri Bhattaraka Charukeerthi Panditacharyavarya Maha Swamiji along with other guests lighted the traditional lamp and inaugurated the function. Later all the

guests spoke briefly highlighting the importance of community organisations and the common teachings of every religion.

D. Surendra Kumar, national executive president of Bharatiya Jain Milan in his speech urged the newly inaugurated unit to reach out to more members of the community in the Gulf and also to spread the message of Jainism. He shared his experience and mentioned on how one should seek favour from the government at the right time for the right necessity which will enable uplifting of the needy in the community.

Frank Fernandes began his speech with a fluent recitation of Vedic hymes, much to the pleasant surprise and delight of the audience. He then delivered a good speech referring to the verses in the Gita and the Epics. He concluded that people of all religions must treat each other with respect and incorporate the essence of all religions in their lives. Pushparaj Jain, secretary of Bharatiya Jain Milan, was also present as a special guest. Prasanna Kumar, president of Bharatiya Jain Milan spoke on the duties and responsibilities of members. Mrityunjaya, Jain leader spoke on the various welfare activities of Jain Milan. The new office-bearers were administered the oath on the occasion. Anitha Surendra Kumar, president of the women's wing of Bharatiya Jain Milan, Devikumar Kambli, president of Jain Milan Dubai were also on the dais along with secretary Sandesh Jain Angadibettu and vice-president B Bharath Hegde. All the guests including Maha Swamiji were felicitated with shawls, garlands, mementoes and fruit baskets. Community leaders of various organisations of the Gulf, namely Satish Venkatramana, Sarvotham Shetty, Satish Poojari, Prashanth Acharya, Shodhan Prasad, Sudhaker Alva, Balakrishna Salian, Herman Lewis and others were present. All these leaders along with the media members were also invited on to the stage and felicitated with flowers.

Later Sri Bhattaraka Charukeerthi Panditacharyavarya Maha Swamiji rendered a beautiful message, calling upon members of the community to tread the path of righteousness and follow the principle of non-violence to lead a meaningful life. He spoke on some of the teachings of Lord Mahavira and their importance in the present world. He ended his speech with Shanti Mantra and blessed the audience. The event continued with cultural programmes compered by Sandesh Jain, secretary of Jain Milan Dubai. Children of Jain community in Dubai presented graceful dances which included folk dance, patriotic dance, classical dance and music.



अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन 2014 संपन्न  
8-9 फरवरी 2014



आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्री वीरेन्द्रसिंह चौधरी



एक दृश्य साइटोस्ट मॉड एनटीसीसी नई दिल्ली



अपना शोध पेपर प्रस्तुत करते हुए डॉ.ब्राइन डीनाल्डसन



अपना शोध पेपर प्रस्तुत करते हुए इसरो वैज्ञानिक डॉ.राजमल्लजी जैन

## NEW BOOKS

### DR. SANJAY JAIN'S BOOK OPTIMAL LIVING 360 RELEASED

Chicago, January 30, 2014. One of the largest and most popular Sports Bars in Chicago has announced that it will be hosting a massive party on February 2nd that includes launch party of the critically acclaimed book *Optimal Living 360: Smart Decision Making for a Balanced Life* by Dr. Sanjay Jain. Along with the festivities, author Dr. Sanjay Jain will be at the event to sign books and speak to fans.



*Optimal Living 360* introduces Integrative Decision Making, an approach that focuses on the big picture and teaches you how to make decisions to receive the highest return on investment in life. In the book, Dr. Jain guides readers through the process of isolating their core values using the ASPIRES model. By using his approach and model, he then explains how to improve aspects of life including health, money, and relationships among others. The book has been critically acclaimed and received reviews from outlets including the Library Journal, Publishers Weekly, Forward Reviews, Kirkus Reviews, and Readers' Favorite. One review said, "Optimal Living 360 is an easy-to-read guide to intelligent decision making that should enable anyone to get the most out of life." *Optimal Living 360: Smart Decision Making for a Balanced Life* is published by Greenleaf Book Group Press and will be available at Amazon, Barnes and Noble, and Sanjay Jain MD on February 3rd.

About Dr. Sanjay Jain: Sanjay Jain, M.D. MBA is an accomplished medical doctor, health expert, life coach, inspirational keynote speaker, and author who has dedicated his life to helping people find their purpose by achieving a meaningful life that they deeply cherish. Sanjay Jain is a US trained, board certified physician with over 15 years of clinical experience. He holds certifications in Diagnostic Radiology, Integrative Medicine, and Healthcare Quality and Management. He is a graduate from the accelerated BS/MD program at The Northeast Ohio Medical University. He has diversified experience in the private practice, academic, and integrated multi specialty settings. He was a former assistant professor at The



Ohio State University where he also obtained his MBA at the Fisher School of Business. The combination of which has given him a unique voice and understanding of the many issues we face today in a real and practical sense.

## HONOUR & AWARDS

### ACHARYA LOKESH HONORED WITH 'AMBASSADOR OF PEACE' AWARD IN UNITED NATIONS CENTRE

New Delhi, 3 February 2014: Founder President Ahimsa Vishwa Bharti and Eminent Jainacharya Acharya Dr. Lokesh Muni was honored with 'Ambassador of Peace' award for outstanding contribution in the field of promotion of Non-violence, Peace and Harmony during United Nation World Interfaith Harmony Week celebrated in United Nation Conference Hall, Lodhi Estate. It is noteworthy that Acharya Dr. Lokesh Muni was also honored with Communal Harmony Award by Government of India previously.



In the program prominent religious leaders of different religions Swamy Chidanand Saraswati President Parmarth Niketan and Sadhvi Bhagwati President Divine Shakti Foundation from Hinduism, Imam Umer Illiyasi President All India Imam Organisation from Islam, Shri Manjeet Singh G.K. President Sikh Gurudwara Prabandhak Committee from Sikhism, Revd. Dr. Clement Rajakumar Chaplain St. Stephen's College Delhi from Cristianity, Ven. Lobzang Lama President Ashoka Mission from Budddhism and Ezekiel Isaac Malekar from Judaism were present on the occasion. Honored with 'Ambassador of Peace' award Acharya Dr. Lokesh Muni said that Religion brings us together it does not create differences. There is no place for violence, hatred, fear and

disgust on the path of religion. He said violence and terrorism cannot solve any problem. All the problems can be solved peacefully through dialogue. United Nation World Interfaith Harmony Week was organised by Universal Peace Federation -India (UPF India) and United Nations Information Centre for India and Bhutan (UNIC) which was inaugurated by Member of Parliament and Former Deputy Speaker Rajyasabha Smt. Nazma Heptulla. Dr. Chung Sik Yong, chairman UPF-Asia, H. E. Balmiki Prasad Singh, Former Governor of Sikkim, Hon. Eknath Dhakal, Former Minister Government of Nepal, Mrs. Kiran Mehra- Kerpelman, Director of UNIC, Dr. Robert S. Kittel, Director of Peace Education, UPF-Asia addressed the program. Source : Kenu Agarwal , Media Convener, Ahimsa Vishwa Bharti, E-Mail: acharya@ahimsavishwabharti.org

### DR SANDEEP KUMAR JAIN NOMINATED NOTED ANIMAL WELFARE ACTIVIST

Ministry of Environment & Forests, Govt. of India has Nominated Noted Animal Welfare activist and Wildlife conservationist Dr Sandeep Kumar Jain, Chief Coordinator CAPE-India has been Nominated as Member of Animal Welfare Board of India. The Animal Welfare Board of India is a statutory advisory body on Animal Welfare Laws and promotes animal welfare in the country. Established in 1962 under Section 4 of the Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960 (No. 59 of 1960), the Animal Welfare Board of India was started under the stewardship of Late Smt. Rukmini Devi Arundale, well known humanitarian with its Head Quarters at Chennai.



Functions of AWBI are: to ensure that animal welfare laws in the country are diligently followed, to provide grants to Animal Welfare Organizations and advising the Government of India on animal welfare issues, the Board has been the face of the animal welfare movement in the country for the last 50 years. The Board consists of 28 Members which Includes M.P.s and Govt. Officials apart from reputed Humanitarians and Nominees of Animal Welfare Organisations, SPCAs, Veterinary Doctor, Allopathic Doctor, Doctor from Indian System of Medicine, Representatives of Municipal Corporations. The Present Board will be Headed by Retired General (Dr) R.M.Kharb AVSM and Dr. S. Chinny Krishna (Chennai) will be Vice Chairman. Dr. Jain who is founder of People for Animals in Ludhiana and has been coordinating animal welfare/ conservation organisations in region, has also been Member of Punjab State Board for Wildlife and and has worked actively in region for the Welfare of Animals and Conservation and Rescue of wildlife. He Has already Worked as Executive Member, AWBI (2001-2004) and has been working as Co-opted Member of AWBI in Regional Sub committee. He also worked as Hony. Wildlife Warden (Punjab) and Special Officer ,Wildlife Crime Control Bureau (WCCB, Govt. of India). Courtesy : M. Lodha, E-Mail - capeindia1@gmail.com

## AHIMSA

### OPEN TRENCHES IN JHARKHAND DEATH TRAP FOR ANIMALS

This is an abandoned well near a village in Jharkhand which has turned into a death trap for elephant calves.



Many such abandoned wells and irrigation trenches lie open with their walls long crumbled, and weed along the edges hiding them from view. Elephant herds crossing through these areas in search of food and water, have on numerous occasions lost their young calves to these wells, as they unsuspectingly move too close, lose their footing, and get helplessly trapped. The baby does not die immediately. It

panics... cries out for help... the mother and rest of the herd try all they can to rescue the calf, but eventually have to leave the fallen calf in the pit to die a slow and painful death. This tragic situation can be avoided by the simple measure of covering up these wells and trenches to ensure these accidents do not happen anymore. Elephants cannot take these steps.

### गौवंश हत्या बंदी के लिए मुंडन आन्दोलन

गौवंश हत्या क़ानून की मांग को लेकर जंतर मंतर में दिल्ली में होगा मुंडन आन्दोलन यह आन्दोलन जैन मुनि श्री विद्या सागरजी महाराज और श्री समधी सागर जी महाराज के सानिध्य में रखा गया है इस आन्दोलन में गौ भक्त अपना सर मुंडन करवाकर सरकार का विरोध करेंगे। इस आन्दोलन में महाराज खुद अपना केश लोचन करके इस आन्दोलन में भाग लेंगे। यह आन्दोलन 2 मार्च 2014 को जंतर मंतर दिल्ली में सुबह 9:30 से प्राम्भ होगा। दिल्ली के आस पास से ज्यादा से ज्यादा गौ भक्त इस आन्दोलन में भाग लेकर इस आन्दोलन को सफल बनावे। और जो भाई बंधू नहीं पहुच सकते वो अपने अपने शहर में." गौ बचाओ क़ानून लाओ के विरोध में मुंडन आन्दोलन" के बेनर लगाकर सरकार का विरोध करे। इस आन्दोलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, मुनि श्री जी के नंबर पर सम्पर्क करे - 09650913364.

## ARTICLE OF THE MONTH



## THE JAIN ART OF SPIRITUAL DYING

Death can happen at any time. If you were on a plane that was about to crash and had no hope of surviving, what would your last thoughts be? Besides getting into a safer position in your seat, would you remember your family, your life, or the possibility of an afterlife?

The art of living well is prescribed by almost all religions, but Jainism goes a step further. Jainism teaches the art of dying well. The Buddhist monk Bhikkhu Jagdish Kashyap once said, "I have learnt many things from Buddhism, but I have to learn the art of dying peacefully from Jainism." The same ideas were expressed by the Gandhian thinker, Vinoba Bhave, who actually chose to die the Jain way.



In Jainism, the spiritual ritual of dying is known as *sallekhana*. In old age or a terminal illness, a person practicing *sallekhana* gradually withdraws from food, medicine, and any other attachments in a manner that does not disrupt inner peace and dispassionate mindfulness. Prayers and scriptures then prepare the person for their passing. Such a practice is controversial in the West because of discomfort with the decision to control a person's own death. In some Judeo-Christian traditions, choosing to die is considered a sin. This taboo practice is common among Jain nuns and monks, though, and some lay

people have followed it, as well. Jains believe that the soul is a living entity and the body is not. Death marks the transition of this soul from the current body to another, which is reincarnation. Because of this move from one body to the next, Jainism asks that death be embraced rather than feared. It must be considered in a manner similar to changing clothes or moving into a new house.

Dissimilar to suicide, which is often a result of a passionate reaction to something, a person undertaking *sallekhana* is calm, dispassionate, and aware. Such a person is not eager to meet death but is willing to face it with grace and self-control. Among Jains, preparing for death starts early and is thought about frequently. One Jain prayer says, "I came in this world alone and will leave alone. That is the nature of human life; even kings and ministers and most powerful people will die one day." This is stated in many religions in one way or another. In the Christian Bible, for example, it says: "All go to the same place; all come from the dust, and all to the dust must return" (Ecclesiastes 3:20). Another reflection in Jain texts reads: "I love my family, friends, and this wonderful life. Now it is time for me to detach myself from them and my possessions. Having a human life was a great opportunity. I will strive to take birth as a human again and continue my spiritual growth. I must give up my negative passions of jealousy, anger, greed, ego, and deceit."

Every day, Jains say "*Micchami dukkadam*" to all living beings they come across. This phrase means: "May all living being forgive me for any harm I may have done to them, intentionally or unintentionally." These are also some of the last words a Jain will say when on their deathbed. Before the advent of modern science, the time and cause of death were often unknown. Advances in medicine now give a terminally ill person the opportunity to predict when death is approaching, narrowing it down to months, weeks, days, or even hours. When this "window of death" is clear, we can practice *sallekhana* in order to transition to the next life in a spiritual and peaceful way. The first step is to become free from attachments - more specifically, to renounce all attachment to family, home, and possessions. At this point, the person vows deeper practice of the three principles of Jainism: non-violence, non-absolutism, and non-possessiveness. They pray for forgiveness for any violence committed in this life. The second and final step is, with the support of family, a doctor, and a spiritual guide, to give up food gradually and become immersed in prayers and hymns. The dying person asks family to

join them in prayer and to avoid any emotional outbursts that may make it difficult to let go. As humans, we will all face death one day. As a Jain, I know how I will take that journey when the time comes. Each tradition has its own way of preparing for death, and it's important to considering it during your life. In fact, considering how you will prepare for death before it arrives often gives you more appreciation for being alive.

The author, Yogendra Jain is a technologist, a serial entrepreneur, and a passionate practitioner and promoter of the Jain way of life. He started his career at MIT Lincoln Labs and Texas Instruments before founding and operating several successful companies.

## READER'S VIEWS

### A BIG THANK YOU TO CONGRESS GOVERNMENT - RAM GOPAL JAIN

Jains of India have been notified as Minority Community in the list of already notified five Minorities as per notification attached. All Jains of India should feel obliged to Mrs Sonia Gandhi Chairperson of UPA and President of Indian National Congress Party , Shri Rahul Gandhi Vice Preident of Indian National Congress Party and Shri Motilal Vohra Treasurer Congress party and all in UPA alliance.



This has happened due to efforts of Government of the United progressive Alliance Shri Manmohan Singh Prime Minister of India, Shri K. Rehman Minister of Minority Affairs, Shri Kapil Sibbal Minister of Law, Mr. Pradeep Jain Aditya Minister of state Rural and Development, Shri Oscar Fernadez Minister of Transport and Shri Prakash Jaiswal Minister and others in the Government of India. Now as you know that General Elections of India for Lok Sabha are due in May 2014 and Jains of India have the best opportunity to thank practically Indian National Congress Party by casting their valuable votes to Indian National Congress Party Candidates through out India. I request with folded hands to all Jains of India to be grateful to Indian National Congress party and to VOTE for the Indian National Congress Party Candidates in the Lok Sabha Elections due in May 2014. My appeal has the full support of Mr. Nirmal Kumar Jain President Shri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha, Ram Gopal Jain, E-Mail : jainramgopal@hotmail.com

### NATIONAL MINORITY STATUS FOR JAINS FINALLY - SAJJAN RAJ MEHTA

We have been denied Minority status so many years though as per Indian census 2001 we are just 42 lakhs among 100 crore enumerated. What we get through Minority status is right to establish and administer our temples, institutions, educational trusts, museums, preserve our culture, heritage and belief to the best of our own hands without Government interference.

Just think for a moment and calculate money spent by Jain samaj all over India on temples, sthankas, bhavans, educational institutions, Goshalas, medical hospitals, dispensaries, pinjarapoles, ancient heritage, monuments, book banks, blood banks, artificial limbs centers, research centers for Jainlogy and administrative training foundation. As per consensus it is believed that in last 66 years since independence our community has spent more than 100 billion rupees in various assets and institutions and every year as per conservative estimate we spend almost Rs. 25000 cr in charity. Most of us have done all these selflessly, out of compassion and empathy. Times have changed since independence We don't have quality of leadership which respects our ethos, sacrifices. Most of political class fight for power to amass wealth at the cost of people, They can pass any order and take over all our assets by a stroke of pen. But if we have Constitutional status of Minority, we have protection and they will not dare to harm or hurt us. . We are a peace loving community. We cant fight like others do. We can only file court cases when our assets come under challenge but the way our system works, it will take 30-40 years to get justice and by that time all our assets will be squandered. What answer we will give to posterity and our departed souls of ancestors if we cant preserve them?

Just think: Girnarji in Gujarat is our sacred Tirth for ages. Our 22 nd Tirthankar Lord Neminathji attained Nirvana but two of hills have already been taken over by vested interest as some agitation was engineered saying he was God of tribals. The objective is to loot forest wealth. What is heritage to us is just wealth for some one. Time has come to think



afresh. We should claim our rightful constitutional status not for gaining employment or some benefits but to preserve our religion, heritage and culture for posterity. We are already reduced to small numbers but what is in free store for future should cause ripples within us. Please support us and highlight the success of the agitation as we all have a collective duty towards our culture and heritage to protect and administer what we created out of sweat. Source : Sajjan Raj Mehta.. Chairman Jain Co-Ordination Committee, Mobile - 9845501150.

## **JAIN MINORITY STATUS - CONFUSIONS, FACTS AND MYTHS - RAJESH JAIN**

A farmer lived in a village of Himachal Pradesh adjoining the Punjab Border. There was border realignment and the village was made a part of Punjab. The villager heaved a sigh of relief and said to his fellow villagers, "Thank God, we shall no longer be required to bear the cold weather of Himachal Pradesh." The reaction of many people to the granting of the minority status to Jains by the Central Government is akin to the reaction of this farmer if the expectation is of Jains getting some extraordinary privilege due to the minority status. Jains already had minority status. In as many as 13 big states of India including Maharashtra (which has the largest population of Jains in India), Karnataka, Madhya Pradesh, Uttar Pradesh, Jharkhand, Delhi, Uttarakhand, West Bengal, Andhra Pradesh, Punjab and Assam, Jains already had the minority status. In all probability, for most Jains and non-Jains it didn't make much of a difference. Another case in point is the following message which is widely in circulation through social media:

- \* Who can donate to a donor?
- \* Jains are 0.40% in number but 26% of Income-tax is paid by them
- \* 62% of the donations are made by them
- \* Does such community need governmental alms?
- \* I am a Jain, but before that I am a Hindu, and before that I am an Indian
- \* I am not a minority

It is tragic to notice how misguided and gullible a few people among the most literate community of the country could be. Many people are confused and they are misguiding all Jains and non-Jains. They seem to have limited understanding of facts, Jain history and philosophy or they have some hidden motive or they are feeling insecure caused by reactions of others. They have no understanding of the meaning of the minority status. They seem to be equating it with reservation. They are finding it difficult to convince themselves and instead of responding with conviction, righteousness and logic; they are reacting in an immature manner and in undue haste. Except Parsis, I have no doubt in saying that Jains, despite having no Gods who can give boons or bestow wealth and wisdom, are the most well-off (in terms of average income) and the most literate (94.1% as compared to the national average of 64.8%) community of India. But it is preposterous to say that Jains, who are such a small minority, contribute 26% income tax. (I have not been able to find an authentic source for this information. Some write 20%, some articles mention 24%. An Income-Tax Commissioner denied availability of any such data). Statistics is a science of accurate measurement. Fact is, hardly 15-20 companies out of the top 500 companies in India are owned by Jains. Jain companies or names rarely appear in the list of top 10 tax payers. There is no basis to say Jains give 62% of all donations in India. Look at South Indian businessmen and temples. Please also take into consideration the practice of charitable giving among Muslims and Christians.

By making such statements, the plight of the needy Jains is getting undermined and the ego of non- Jains is justifiably getting hurt. Such statements are loaded with motives, are counterproductive and provide false arguments to the ignorant opponents. At the fundamental level, even Hindus look at Jains as different from themselves. They categorize or group Jains not with various castes or with various sects of Hinduism, but with other religions like Muslim, Sikh, Christian, Buddhist and Parsi. They don't worship Tirthankaras. This proves that Jainism is a separate religion and not a part of Hinduism. We are Jains, and we are Indians, but we are not Hindus. Just because few Jains worship Ganesha and Lakshmi, all Jains cannot be called Hindus. Many Hindus go to Dargah-e-Sharif at Ajmer and the kids studying in Christian schools develop the habit of making a cross on the chest or celebrate Christmas and wait for Santa Claus. Does it mean they are no longer Hindus?

Moreover, these people are asking - Does such a community need governmental alms? Minority status is not so much about getting some benefits and privileges; it is about getting protection and ensuring preservation of culture. It is not at all

about reservation. My friends should note that the biggest beneficiaries of reservation are Hindus. Let me present some more facts before you: 1. Muslims, Sikhs, Christians (who are much larger in number) and Buddhists; and Parsis (who are by and large well to do) were already enjoying the minority status since a long time. Did it affect you or did you even know this? If Muslims, Sikhs and Christians are considered minority, why not Jains who are only (0.4%) of the population? If Parsis are ok with minority status despite their affluence, why do some people feel they have been downgraded with the tag of minority status? 2. Hindus enjoy the highest reservation. In India SC (15.00%), ST (7.50%) and OBC (27.00%) enjoy 49.50% reservation. This reservation has absolutely nothing to do with the minority status. The largest beneficiaries of the reservation system are Hindus. With due concern for the poor and needy, I must say that talented but financially weak Jain youngsters are as much the victims of this social and political menace which India has not been able to get rid of despite over 65 years of independence.

Religion-wise break up of beneficiaries for SC and ST categories are as follows:

Religion	Scheduled Caste	Scheduled Tribe
Buddhism	89.50%	7.40%
Christianity	9.00%	32.80%
Sikhism	17.00%	0.90%
Hinduism	22.20%	9.10%
Jainism	0.00%	2.60%
Islam	0.80%	0.50%

It is obvious from the above table that Buddhism had almost become extinct in India before some people of Schedule Caste converted to Buddhism. Few tribes, who constitute 2.60% of the total Jain population, get the benefit of Reservation. But the fact remains that Hindus are the largest beneficiaries of the Reservation system. I am still searching for religion-wise data for the OBC category but you can clearly see from the above table that the biggest beneficiaries of reservation are Hindus. Upper caste Hindus fail to recognize that non-Hindus suffer as much as they do due to the issues associated with Hinduism. Unfortunately, people are trying to remain politically correct, even if it is at the cost of being principally and factually wrong.

#### Definition of Minority

Indian constitution doesn't define minority - According to a definition offered in 1977 by Francesco Capotorti, Special Rapporteur of the United Nations Sub-Commission on Prevention of Discrimination and Protection of Minorities, a minority is: "A group numerically inferior to the rest of the population of a State, in a non-dominant position, whose members - being nationals of the State - possess ethnic, religious or linguistic characteristics differing from those of the rest of the population and show, if only implicitly, a sense of solidarity, directed towards preserving their culture, traditions, religion or language." Jains are numerically inferior, different from other religious communities and want to preserve their religion. Jains are minority. UN declaration says that states should protect their existence. It is also an anthropological requirement that ethnic diversity is maintained, otherwise the culture of sameness will make everything stale and boring. Jains are a minority and it is a fact. We look up to all our non-Jain brothers and sisters to relate with our need to preserve our religion and culture.

#### Some More Facts

1. Jains are very small in number (0.4% as per census ). This figure is not correct as many Jains for centuries have stopped identifying themselves as Jains. Paul Dundas writes that as far back as in the Census Report for the Punjab of



1921, permission was given to record such Jains as "Jainhindu", which in his opinion was an 'unhappy and artificial compromise". Still Jains are in a very small number as compared to national and international population.

2. The proportion of Jains has declined drastically over the centuries. Once a major religion, Jainism declined more particularly after the 7th Century due to a number of factors including suppression by other religious groups, persecution, withdrawal of royal patronage, sectarian fragmentation, difficult religious practices, political necessity to identify with the majority and the absence of central leadership.

3. Jains are further decreasing in terms of percentage of population. Census of 2001 brings to light two alarming facts as can be seen in the following table -

<b>Religion</b>	<b>%ge of 0-6 age group to total population of the community</b>	<b>Child Sex Ratio</b>
Hindus	15.60%	925
Muslims	18.70%	950
Christians	13.50%	964
Sikhs	12.80%	786
Buddhists	14.40%	942
Jains	10.60%	870
Other Religions	18.00%	976
India	15.90%	927

Proportion of population in the age group 0-6 to total population offers a general picture of the relative fertility status among the religious groups. While the proportion for all-India is 15.9 per cent, Jains exhibit the lowest rate at 10.6 per cent. Hindus have 15.6 per cent. On the other hand, Muslims have the highest proportion of 18.7 percent. Jains have adopted birth control due to higher literacy rate. But they are also shrinking fast proportionately. But more serious is the issue of Jains not having awareness of their great legacy and inability to practice and identify with Jain principles, values and practices. If culture is not protected, Jainism will soon be facing the threat of extinction, just like Parsis.

The child sex ratio is 927 for all India in 0-6 population group, signifying great imbalance in future male-female ratio. Among Jains the ratio is only 870 which is 57 points below the national average of 927, which is a very alarming situation.

Jains are a distinct religion, very different from Hinduism. Paul Dundas writes that most British judges of the 19th century "had no doubts about the independent nature and origin of Jainism". In 1847, one judge wrote that religious minorities like Jains, Parsis, and Sikhs "Had nothing or next to nothing in common with brahmanical worship". Indian Census and the Supreme Court on numerous occasions have recognized Jainism as different from Hinduism. Dr. Herman Jacobi said, ".....let me assert my conviction that Jainism is an original system, quite distinct and independent from all others; and that therefore it is of great importance for the study of philosophical thoughts and religious life in ancient India.

"Jains want to preserve their identity, philosophy and culture. This is the reason many distinct Jain organizations are formed. This is the reason we try as much as we can to marry our children within the community. We worship Tirthankaras and have our own Shashtras or Aagam.

A Hindu has to belong to a caste. If Jains were part of Hinduism, which caste would they belong to? While most of the Jains are considered to be baniyas, the Tirthankaras were kings and warriors. Many Jains have made great philosophical and intellectual contributions.

While comparing with Islam and Christianity, Hinduism is presented as a religion. On the other hand, while comparing with Jainism and Buddhism etc., Hinduism is presented as a way of life. The argument is not consistent.

Quite often, people ask - "when did Jainism separate from Hinduism?" It is like asking, "When did your wife stop beating you?" There is an assumption that Jainism is an off-shoot of Hinduism. This is not correct. Dr. S. Radhakrishnan, the great philosopher has written, "There is nothing wonderful in my saying that Jainism was in existence long before the Vedas were composed."

Hindus are a minority in these 7 states

Region	Hindus	Total	% Hindus
Manipur	996,894	2,166,788	46.01%
Arunachal Pradesh	379,935	1,097,968	44.60%
Punjab	8,997,942	24,358,999	38.94%
Jammu and Kashmir	3,005,349	10,143,700	34.63%
Meghalaya	307,822	2,318,822	29.27%
Nagaland	153,162	1,990,036	9.70%
Lakshadweep	2,221	60,650	7.66%
Mizoram	31,562	888,573	6.58%

Many groups are demanding minority status for the Hindus in these states for the last many years.

**The Key Benefits** - The key benefits of the minority status are in terms of more protection to Jain temples and practice of Jain religion, more freedom in managing and maintaining religious and educational institutions, the right to reserve 50% seats of Jain run educational institutions for Jain students and in being able to share certain grants available to minorities. Jain saints will be able to move more freely across the country with more arrangement of security from the state. The recent frequent attacks on them and encroachment of the Jain temples were major areas of concern.

**Disclaimer** - Let me clarify that I have no intention of offending my brothers and sisters belonging to other religions. Jainism's motto is parasparopagraho jeevaanaam meaning all lives are bound together by mutual support and interdependence. Moreover, one of the fundamental tenets of Jainism is anekant or non-absolutism) which recognizes that truth often is multisided and relative and with our limited knowledge we all know only partial truth. In simple terms, it means we shouldn't get stuck in "ism" but talk in the more accommodative language of "may be". This is very well illustrated through the story of six blind men and the elephant. Unfortunately, even many Jains are not aware of these powerful and contemporarily relevant philosophies of Jainism, which are essential for the modern world along with Ahimsa (non-violence) and Aparigraha (non-accumulation) to deal with the burning problems like terrorism and violence, environmental problems and mental stress. Let me also emphasize that Jains relate very well with their Hindu brothers and sisters and celebrate many rituals and festivals together. The proximity has led to submergence of the Jain identity into Hinduism and has led people to falsely believe that Jainism is a branch of Hinduism.

Nothing can be farther from truth. Jainism doesn't believe in a creator God and normal human beings are supposed to reach the highest level through qualitative improvement. All religions of the world speak of God coming to the earth to rescue his children. Jainism talks of promoting normal human beings to Godly levels. History will testify that Jains have rarely forced their philosophy and religion on others. Jainism has not been an aggressor, but mostly been a victim. No wonder, it is on the verge of extinction and despite having a glorious past, as evidenced by presence of old temples and statues across India and an extraordinarily scientific and contemporary philosophy. "Jainism's important tenets are based on science. The more science advances, the more Jainism will be proven true" - L.P. Tessitori ). But for this to happen, Jainism will have to at least survive. It has enough appeal for the young inquisitive mind provided one is willing to go full length in the search of truth and meaning.

**Conclusion** - George Bernard Shaw is attributed to have said, "I adore so greatly the principles of the Jain religion, that I would like to be reborn in a Jain community." If Jainism is allowed to submerge and lose its identity, I wonder how Bernard Shaw's wish will ever come true. The tragic part is that most Jains are not aware of their immensely valuable and rich intellectual, cultural and philosophical legacy. . They fail to look at Jainism beyond vegetarianism, having Jain Menu in restaurants and during flights and not eating after sunset. Jainism is much deeper and amazingly enlightening to people having spiritual quest. It doesn't disappoint a true seeker. It is a contemporary philosophy. The need is to look at true Jainism beyond the rituals. The global society needs Jain philosophy to survive. Let us not be principally incorrect in the desire to be politically correct. Let us also not feel that it is humiliating in any manner to be identified as a minority. It is an existential issue for Jains, of course not as a human species, but definitely as a distinct enriching culture. Human excellence, qualities and social richness is identified through differentiation, in allowing different religions and cultures to coexist, and not in aggregation. In the development of the Indian culture, Jains have been the contrarians and the unifier, the catalyst and the binder.

It must be understood that a minority may disappear from a society via assimilation, a process through which a minority group replaces its traditions with those of the dominant culture, sometime by force and sometime in its need to appease the significant others. We are all idealists when it concerns others and lament why others are not liberal and broad minded, while remaining rigid about our own religion and culture. To my brothers and sisters in majority, I will say this - "If need be, I can die for you; but allow us to live in our own way." To my fellow Jains, I would say - "please be firm with the values and be flexible with the practices." For God's sake (in which we Jains don't believe), please try to understand true Jain values and principles. I hope the Indian society will accept with tolerance the fact that Jains are actually a minority and that it is not so much an issue of getting some kind of political mileage. Jains will never behave like a votebank and are intelligent enough to stand for what is good for the country, though each individual will express his political ideology in his own way with which you may or may not agree. "Our culture has accepted two huge lies. The first is that if you disagree with somebody's lifestyle, you must fear or hate them. The second is that to love someone means you agree with everything they believe or do. Both are nonsense."

We all are different and need not agree to everything about each other. The pillar of a thriving democracy is the statement - "I may not agree with you, but I shall fight for your right to speak." Let the Indian democracy have all the colors of the rainbow and the Indian culture the requisite variety that protects it from being stale. Source : CA Rajesh Jain, Author & Editor, Janus Advisory Services, Kolkata 700017, E-Mail: info@fambizindia.com, Mobile: +91 98360 80488, Courtesy Sahu R. P. Jain, E-Mail : globaljain@gmail.com

## MISCELLANEOUS

### ENTREPRENEUR NAVEEN JAIN EDGES CLOSER TO CLINCHING THE \$40 MILLION GOOGLE LUNAR XPRIZE COMPETITION

Washington, DC: Billionaire entrepreneur and space visionary Naveen Jain is one of three key backers behind a Google Lunar XPrize team that is leading competition in all three key areas of consideration. Naveen Jain along with Bob Richards, one of the original co-founders of the International Space University back in 1987, and Barney Pell, a former manager at the US National Aeronautics and Space Administration (NASA) are at the helm of Moon Express, a team that is one of the leading contenders of the Google Lunar XPrize competition.





The goal of the competition is to have teams create a spacecraft that can do the following three things: make a soft landing on the moon, detach a lunar module that can travel a minimum of 500 meters on the moon's surface, and develop an imaging system that can transmit a high-quality picture and video feed back to Earth. Moon Express is one of only two teams to have received "milestone prizes" in all three of those categories (Landing, Mobility, and Camera, as the competition calls them); the other is Astrobotic, which is headed up by Carnegie Mellon University robotics professor William Whitaker. Another Indian-fronted team, Team Indus, has received the milestone prize in the categories of landing system and imaging system - only two and three other teams have been named in each field, respectively. The competition was first announced in 2007, with teams finalized in 2011.

The originally 33 have been whittled down to 18, a result of some dropping out and other joining forces with each other. Each category has its own prizes - for example, the team with the best landing system stands to win \$1 million - with a total of \$40 million being given out by Google. Naveen Jain has been at the forefront of privatizing space travel in an effort to cut through governmental red tape and allow more innovative people in the private sector to advance the stagnating field of space exploration.

### REVIEW OF MEAT EXPORT POLICY BY RAJYA SABHA

The petition was admitted by Hon'ble Chairman, Rajya Sabha on 7th January, 2013 under the provisions of Chapter X of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Council of States (Rajya Sabha). In accordance with Rule 145 ibid, the petition was reported to the Council on 26th February, 2013 by Secretary-General after which it stood referred to the Committee on Petitions for examination and report in terms of Rule 150 ibid. 3. The Committee issued a Press Communiqué inviting suggestions from individuals/organisations on the subject matter of the petition. In response thereto, the Committee got overwhelming response and more than ten lakhs memoranda were received by the Secretariat. The Secretariat scrutinized those memoranda and a gist of the same has been suitably incorporated in the Report. To read more further please click here.....

### DIKSHA NEWS

#### MUMBAI WITNESSES BIGGEST DIKSHA PROGRAMME



It was probably first occasion, when nine highly educated girls inspired by Namra Muniji Maharaj of Jain Sthanakwasi Sect took Diksha at Ghatkoper, Mumbai on 9th February, 2014.

The programme which was organised at Ghatkoper, Mumbai was attended by several thousand ardent followers from community and other religion as well. Several saints of all the four sects also blessed the candidates by their presence at the venue. Shri Praveen Rishiji, Shri Manohar Muniji, Shri Divakar Muniji and Shri Namra Muniji delivered poignant speeches to make the atmosphere emotional. Namra Muniji introduced all the candidates.

It is reported that, diksha programme was attended by one hundred eighty two saints

of four sects and one hundred eighty nine Jain Sangh from different parts of the country and thirty one thousand community members.

Rupees twelve crore were collected as donations. Rupees nine crore were collected for the welfare of Jain saints. The programme which lasted over nine hours was also relayed live through television channels.

## HIGH COURT TO HEAR PLEAS IN FAVOUR OF CHILD DIKSHA

Feb 23, 2014, Mumbai : Bombay high court is slated to hear petitions asserting that child diksha or renunciation is a practice integral to Jainism and challenging the authority of child welfare committee to step in to protect young girls. A division bench of Justice V M Kanade and Justice Girish Kulkarni will hear petitions filed by Ashok Bagricha and others challenging the jurisdiction of the child welfare committee (CWC). In March 2004, the diksha ceremony in which the 8 yr-old girl renounced the material world created a furor among child rights activists. It was brought to the attention of CWC by Childline, an NGO. In July 2006, the HC had directed CWC to find whether she had taken diksha voluntarily or was forced. CWC reported that the young girl needs care. Her parents challenged the CWC's order in the HC, which granted a stay on it. Bagricha's advocate had argued in November 2011 that dikshais a practice which is integral to the practice of Jain religion and CWC has no right to step in an extend its protection which is otherwise made to destitute children to a child who on own volition opts for diksha. He had also argued that Jainism was founded in 7 th Century BC, is a religion of sophistry where individual salvation is through individual upliftment and one of these is through child diksha. The judges had then directed affidavits to be filed by two sects of Jainism - Shwetambar and Terapanth - including those of experts on the issue.

## DEV LOK GAMAN

शासनश्री साध्वीश्री राजकुमारीजी सुखद संयम पर्याय पूर्ण कर हुयी राज(मोक्ष) पथ कि और अग्रसर



शासनश्री साध्वी राजकुमारीजी गोगुन्दा का दिनाक ०२:०२:२०१४ सुबह ५ बजकर २ मिनट पर चौविहार संथारे में अरिहंत चरण कालूगुनी द्वारा दीक्षित तेरापंथ धर्म संघ कि दीक्षा पर्याय में विशिष्ठ शासन श्री साध्वी राजकुमारी गोगुन्दा का 93 वर्ष आयु में चौविहार संथारे में देवलोकगमन हो गया! आपश्री कि दीक्षा संवत 1985 में कालूगुनी के हाथो पडिहारा में हुई थी! दीक्षा के समय आपश्री कि आयु 8 वर्ष 7 माह और 14 दिन कि थी! आपका जन्म संवत 1977 को हुआ था! साध्वी राजकुमारी गोगुन्दा ने अपनी माँ साध्वीश्री फुलाजी के साथ दीक्षित हुई थी! आपने साध्वीश्री कानसतिजी को देखा! पिछले 70 वर्षो से साध्वी श्री पानकुमारीजी और आप साथ में है! आपश्री 9:5 वर्षो तक गुरुकुलवास में रही! परम पूज्य आचार्य श्री ने विक्रम संवत 2069 आषाढी पूनम को "शासनश्री" का अलकरण प्रदान करके गौरव बढ़ाया।

ज्ञात रहे 13 जनवरी 2014 को संगारी संथारा लिया जो 20 घंटे तक रहा! 14-15 जनवरी को उपवास रहा! 16 जनवरी 2014 को पूज्य प्रवर विशेष रूप से साध्वीश्रीजी को दर्शन देने उदासर पधारे थे! और साध्वीश्रीजी कि भावना को देख गुरुदेव ने तिविहार सलेखना पचचकाया ! रात 7:02 मिनिट पर चौविहार संगारी संथारा लिया और आज सुबह 04:15 मिनिट पर जीवंत पर्यन्त चौविहार संथारा पचचका. उदासर से शालू चौपडा।

## टैंकर की टक्कर से निरंजन मुनि का देवलोक गमन, एक संत गंभीर घायल

नागौर-जोधपुर हाइवे संख्या 65 पर लालावास गांव की सरहद में सुबह करीब सवा सात बजे जोधपुर की ओर विहार कर रहे दो जैन संतों को एक टैंकर चालक ने टक्कर मार दी। एक जैन संत निरंजन मुनि की मौके पर ही मौत हो गई। दूसरे संत विनय मुनि भीम गंभीर घायल हो गए। मौके पर पहुंचे लोगों ने उन्हें खींवसर के राजकीय अस्पताल पहुंचाया। यहां से उन्हें जोधपुर रेफर कर दिया। निरंजन मुनि की बाद में नागौर में जैन समाज की ओर से अंत्येष्टि की गई।



कार्यवाहक थानाधिकारी संग्राम सिंह ने बताया कि तीन जैन संत खींवसर क्षेत्र के लालावास गांव के हनुमान मंदिर से रवाना होकर जोधपुर की तरफ जा रहे थे। करीब सवा सात बजे एक टैंकर चालक ने चार पहिया साइकिल चला रहे श्रमण संघीय युवाचार्य मधुकर मुनि के शिष्य निरंजन मुनि (50) को टक्कर मार दी। इस साइकिल पर श्रमण संघ के सलाहकार विनय मुनि भीम (65) पर बैठे थे। हादसे में निरंजन मुनि मौके पर ही देवलोक गमन हो गए। विनय मुनि

भीम गंभीर घायल हो गए। सन्मति साहिल मुनि कुछ दूरी पर आगे चल रहे थे।

हादसे के बाद मौके पर पहुंचे लोगों ने पुलिस को सूचना दी। गंभीर घायल विनय मुनि भीम को खींवसर के राजकीय अस्पताल ले गए। खींवसर अस्पताल में चिकित्सक नहीं होने के कारण एक बार गुस्साए लोगों ने ताला लगा दिया। बाद में समझाइश से लोग माने और डॉक्टर ने पहुंचकर उपचार शुरू किया। बाद में उन्हें जोधपुर रेफर कर दिया। जोधपुर में उनका उपचार चल रहा है और उनकी स्थिति में सुधार बताया जा रहा है। घटना के बाद टैंकर चालक मौके से भाग गया। जैन समाज के लोग पहुंचे खींवसर - निरंजन मुनि के देवलोक गमन व विनय मुनि भीम के गंभीर घायल होने की सूचना मिलने पर बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग खींवसर पहुंचे। इसमें जोधपुर, नागौर, सोयला, लाडनूं, धनारी, बावडी, खींवसर सहित गांवों से समाज के लोग खींवसर अस्पताल आए। नागौर से रिखबचंद नाहटा, ज्ञानचंद सिंघवी, दशरथ लोढा, विमलचंद नाहटा, पिंदूसा ललवानी, छिमू ललवानी, अर्जुन चौरडिया, प्रमिल नाहटा, नरेंद्र गोयल, चंचल मल ललवानी, महावीर बांठिया, संजय पीचा, गौतम कोठारी, संपत लूणावत, घेवरचंद नाहटा, पारस लूणावत, मनीष भूरट, देवेंद्र सुराणा, कमलचंद ललवानी, मनीष सुराणा, प्रकाशचंद बोहरा, महेंद्र कांकरिया, फतेहचंद ललवानी, महावीर भूरट सहित समाज के लोग पहुंचे।

## DONATION APPEAL

We Earnestly Appeal To Our Esteemed Readers And Community Institutions  
To Financially Contribute & Support Our Endeavour To Serve The Community

The Foundation is also registered under Foreign Contribution (Regulation) Act, 1976 of Government of India. The contributions can be sent to "Ahimsa Foundation", 21, Skipper House, 9, Pusa Road, New Delhi - 110005.

Bank Reference for Foreign Contributions : Account Number : 062-900-010-026-6527 ( IFS Code PUNB0062900) Bank - Punjab National Bank, New Rajinder Nagar Branch, New Delhi- 110060.

Bank Reference for Indian Contributories, Bank Account Number : 062-900- 010-024-8576 ( IFS Code PUNB0062900), Bank - Punjab National Bank, New Rajinder Nagar Branch, New Delhi- 110060.



**JAIN CALENDAR FOR THE MONTH OF MARCH 2014  
VIR SAMVAT 2540 JAIN CALENDAR VIKRAM SAMVAT 2070**

Aatham   Chaudas   Pancham   Bij   Agiyaras	Jain Festival	Auspicious Day
---	---------------	----------------

MAHA - MARCH 2014 - FAGAN   CHAITRA							AVOID GREEN & ROOT VEGETABLES Date : 3   5   9   12   15   18   21   24   27   29
Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat	Sun	AVOID ROOT VEGETABLES Date: 1   4   13   14   16   20
31 Sud Ekam		MAHA: 1 MARCH FAGAN: 2 TO 30 MARCH   CHAITRA: 31			1 Vad Amas	2 Sud Ekam	JAIN FESTIVAL Date : 14 - Siddhachal Chhagau Yatra   Pradishama Date : 15 - Chaumasi Chaudas Date : 16 - Poonam (Bhav Siddhachal Yatra) Date : 24 - Varshitap Begins
3 Sud Bij	4 Sud Choth	5 Sud Pancham	6 Sud Chhath	7 Sud Satam	8 Sud Satam	9 Sud Aatham	AUSPICIOUS DAY Date : 01 - Vasupujya Diksha Kalyanak Date : 03 - Aranath Chavan Kalyanak Date : 03 - 20 Viharmans Bhagwans Diksha Kalyanak Date : 04 - Malinath Chavan Kalyanak Date : 09 - Sambhavanath Chavan Kalayanak Date : 13 - Mallinath Nirvan Kalyanak Date : 13 - Munisuvrata Diksha Kalyanak Date : 20 - Parshvanath Chavan & Kevalgnan Kalyanak Date : 21 - Chandraprabhu Chavan Kalyanak Date : 24- Adinath Janma & Diksha Kalyanak
10 Sud Nom	11 Sud Dasam	12 Sud Agiyara s	13 Sud Baras	14 Sud Teras	15 Sud Chaudas	16 Sud Poonam	OTHER Date : 06 - World Book day Date : 08 - International Women's Day Date : 17-18 - Holi Date : 29 - Earth Hour   Date : 30 - Mother's day
17 Vad Ekam	18 Vad Bij	19 Vad Trij	20 Vad Choth	21 Vad Pancham	22 Vad Chhath	23 Vad Satam	
24 Vad Aatha m	25 Vad Nom	26 Vad Dasam	27 Vad Agiyaras	28 Vad Baras	29 Vad Chaudas	30 Vad Amas	

DISCLAIMER - Although AHIMSA TIMES NEWS uses its best efforts to ensure the accuracy of the content on the site, sometimes, errors, mistakes or inaccuracies may creep in inadvertently. We make no guarantees as to the accuracy, correctness or reliability of the contents. We may also change the content of this site, at any time, without prior notice. In no event shall Ahimsa Times be liable to anyone for any damages of any kind arising out of or in connection with the use of this service. You agree to indemnify and hold Ahimsa Times harmless from any and all claims, liabilities, damages, costs and expenses including lawyer's fees, arising from any use of any information from this. We also request all over readers to inform us of any inaccuracies, omissions and errors etc. noticed by them so that necessary corrections can be timely incorporated.

**WE HEARTILY WELCOME FOLLOWING NEW MEMBERS WHO HAVE JOINED  
WWW.JAINSAMAJ.ORG DURING THE MONTH OF MARCH 2014**

1. Suman Surana, Swetambar, Agra, Uttar Pradesh, Marketing
2. Vinod Kumar Bhavsar, Digambar, Bombay, Maharashtra, Arts
3. Jainpravin Jain, Swetambar, Pipli Ahiran, Rajasthan, Business
4. Mohit Kumar Jain, Digambar, Indore, Madhya Pradesh, Service
5. Ankit Jain, Digambar, Gaziabad, Uttar Pradesh, Arts
6. Harshit Jain, Digambar, Moradabad, Uttar Pradesh, Service
7. Dr. Chiranjee Lal Bagra, Digambar, Kolkata, West Bengal, Media
8. Mansukh Jain, Swetambar, Ahmedabad, Gujarat, Industrialist
9. Shrenik Kumar Solanki, Swetambar, Surat, Gujarat, Scientist
10. Ca Deepak Kumar Vagrecha, Swetambar, Bangalore, Consultancy

11. Anil Kumar,Digambar,Uthukotai,Tamilnadu,Business
12. Dhas Jain,Digambar,Chennai,Tamilnadu,Retired
13. Sumit Jain,Swetambar,Raipur,Chhattisgarh,Law
14. Surendra Kumar Sethia,Swetambar,Bangalore,Karnataka,Business
15. Bhadresh Shah,Swetambar,Ahmedabad,Gujarat,Service
16. Anil Kumar Jain,Digambar,Noida,Uttar Pradesh,Business
17. Biltu Shah,Digambar,Muzaffar Pur,Bihar,Arts
18. Sumit Nahar,Swetambar,Chittorgarh,Rajasthan,Arts
19. Santosh Kumar Bandamutha,Swetambar,Hubli,Karnataka,Service
20. Kamal Kumar Chhajed,Swetambar,Kota,Rajasthan,Industrialist
21. Jignesh P. Shah,Swetambar,Mumbai,Maharashtra,Consultancy
22. Kuber Bhupal Magdum,Digambar,Kolhapur,Maharashtra,Engineer
23. Ajith Doss Jain,Digambar,Gingee Taluk,Tamil Nadu,Business
24. Parag Palsapure,Digambar,Katol,Maharashtra,Management
25. Rajiv Jain,Digambar,Shalimar Bagh,Delhi,Business
26. Rajendra Mangilal Shingi,Swetambar,Kolkata,Engineer
27. Manish Kumar Jain,Digambar,Jabalpur,Madhya Pradesh,Business
28. Kailash Tiwari,Digambar,Gandai,Chhattisgarh,Arts
29. Dr. Sanjay Sarsamkar,Digambar,Solapur,Maharashtra,Scientist
30. Shridhar Goture,Digambar,Sadalga,Karnataka,Student
31. Shubham Jain,Digambar,Alwar,Rajasthan,Arts
32. Sunil Kumar Jain,Swetambar,Hyderabad,Andhra Pradesh,Business
33. Dhruvin Jain,Swetambar,Ahmedabad,Gujarat,Student
34. Ankit Sethi,Swetambar,Bhilwara,Rajasthan,Finance
35. Ajit Kumar Jain,Digambar,Sagar,Madhya Pradesh,Others
36. Rakesh Jain,Digambar,Jaipur,Rajasthan,Finance

Place request to add your free listing in  
World's largest Jain Directory on  
[www.jainsamaj.org](http://www.jainsamaj.org)  
ENTRY FORM

### Matrimonial Candidates

This Matrimonial Service is **free** for all Jain candidates

**Click Online Individual Profile or Visit [www.jainsamaj.org](http://www.jainsamaj.org) "Matrimonial Section" for details**



### BRIDES

1. Ekta Jain,23,Digamber,Jaipur,Rajasthan,Arts
2. Angel Vasa,23,Swetamber,Jamnagar,Gujarat,Engineering
3. Kriti Rani Jain,23,Swetamber,Manasa,Madhya Pradesh,Engineering
4. Anchal Jain,28,Swetamber,Noida,Uttar Pradesh,Others
5. Shweta Jain,27,Swetamber,Sojat Road,Rajasthan,Others
6. Neha Nalwaya,34,Swetamber,Udaipur,Rajasthan,Others
7. Shanaya Shah,23,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Medicine
8. Disha Shah,27,Swetamber,Surat,Gujarat,Law
9. Megh Shah,26,Swetamber,Vadodara,Gujarat,Engineering
10. Ruchi Sanghvi,28,Swetamber,Rajkot,Gujarat,Computer
11. Dr.Gunjan Chordiya,27,Swetamber,Manmad,Maharashtra,Medicine

12. Meenakshi Jain,25,Digamber,Udaipur,Rajasthan,Service
13. Chitra Shrishrimal,27,Swetamber,Barshi,Maharashtra,Others
14. Rashi Jain,26,Digamber,Gonda,Uttar Pradesh,Engineering



## GROOMS

1. Naval Singh Choudhary,28,Swetamber,Bhilwara,Rajasthan,Service
2. Udeeta Sheth,25,Swetamber,Rajkot,Gujarat,Computer
3. Amit Jain,32,Digamber,Shahadra,Delhi,Service
4. Dharmesh Shah,28,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Business
5. Ankit Jain,32,Digamber,Yamunagar,Haryana,Business
6. Akshay Desai,24,Swetamber,Dhasa,Gujarat,Engineering
7. Aakash Shah,25,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Industry
8. Pramesh Jain,33,Swetamber,Shastri Nagar,Delhi,Business
9. Harshit Jain,25,Digamber,Moradabad,Uttar Pradesh,Service
10. Himanshu Bagadia,34,Swetamber,Mumbai,Maharashtra,Business
11. Tanushree Singhvi, 23,Swetamber,Bhayander (East),Maharashtra,Others
12. Shrenik Kumar Solanki,36,Swetamber,Surat,Gujarat,Medicine
13. Swapnil Khater,28,Swetamber,Pune,Maharashtra,Computer
14. Deepak Jain,29,Swetamber,Udaipur,Rajasthan,Business
15. Dilip Kumar Jain,44,Swetamber,Chennai,Tamilnadu,Business
16. Gautam Kumar Sancheti,32,Swetamber,Jaipur,Rajasthan,Computer
17. Ruchit Kumar Sankhesara,27,Digamber,Idar,Gujarat,Engineering
18. Maneesh Kumar Jain,37,Digamber,Chandni Chowk,Delhi,Service
19. Yavnik Chougale,23,Swetamber,Anand,Gujarat,Service
20. Hitesh Mehta,49,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Engineering
21. Amit Kumar Bohra,31,Swetamber,Beawar,Rajasthan,Divorcee
22. Prasan Kumar Sancheti,37,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Business
23. Vishal Shah,25,Swetamber,Ahmedabad,Gujarat,Service
24. Jayesh Kumar Jain,26,Digamber,Udaipur,Rajasthan,Service
25. Hemant Jain,27,Digamber,Vidisha,Madhya Pradesh,Engineering
26. Rupesh Jain,24,Swetamber,India,Service
27. Rajendra Modi,29,Digamber,Ratlam,Madhya Pradesh,Others
28. Sumit Kumar Jain,28,Swetamber,Pali,Rajasthan,Business
29. Vishal Utture,30,Digamber,Pune,Maharashtra,Engineering
30. Mahaveer Rathod,25,Swetamber,Belgaum,Karnataka,Service
31. Jeetendra Jain,44,Swetamber,Hindaun City,Rajasthan,Computer
32. Sujay Ostwal,31,Swetamber,Pune,Maharashtra,Others
33. Rahul Kumar Chougule,25,Digamber,Nandre,Maharashtra,Others
34. Pushpendra Jain,32,Digamber,Faridabad,Haryana,Service
35. Jignesh Shah,36,Digamber,Ahmedabad,Gujarat,Others

**ENTRY FORM**

**JAIN BUSINESS DIRECTORY -WELCOME TO NEW MEMBERS - MARCH, 2014**

1. Futureeye Global Tec,T.Nagar,Tamilnadu,Exporters/Importers
2. Nidhaan Buildcon Pvt. Ltd.,Mumbai,Maharashtra,Real Estate



3. Maru Investment,Udaipur,Rajasthan,Consultants
4. Uni-Tech Solutions,Thane,Maharashtra,Electricals/Electronics
5. Jain Surgical Clinic,Pitampura,Delhi,Medical
6. Pradeep Agencies,Vridhachalam,Tamilnadu,Miscellaneous
7. Aadinath Creations,Panipat,Haryana,Textiles
8. Paramount Industries,Ahmedabad,Gujarat,Industry
9. Rewind Pr-Media,Jaipur,Rajasthan,Consultants
10. Khel Ghar,Patna,Bihar,Trading
11. Impressive Star Soft,Jaipur,Rajasthan,Computers
12. Sethia Enterprises,Bangalore,Karnataka,Trading
13. Jain Soaps,Ahmedabad,Gujarat,Medical
14. Kota Electronics,Kota,Rajasthan,Electricals/Electronics
15. Ratana Bai Jain Impe,Chennai, Tamil Nadu,Exporters/Importers



**Advertisement Tariff - " AHIMSA TIMES"**

**MAIL YOUR EMAIL ADDRESS FOR FREE COPY OF "AHIMSA TIMES" AND OTHER JAIN CIRCULARS**



### **REQUEST TO READERS**

If you find any inconsistencies or errors in Ahimsa Times, please do inform so that we can affect corrections.

Editor

- Ahimsa Foundation -

Delhi Office : 21, Skipper House , 9, Pusa Road , New Delhi - 5 , India

Phones : +91-11-2875-4012 & 13, 98-100-46108 , E-Mail [ahimsa@jainsamaj.org](mailto:ahimsa@jainsamaj.org)

Jodhpur Office : 44, Sardar Club Scheme, Air Force Area, Jodhpur, Rajasthan, India

Phone : +91-291-267-0382, E-Mail : [ahimsatimes@jainsamaj.org](mailto:ahimsatimes@jainsamaj.org)